

दशा और दिशा

औरंगाबाद के युवा संगठन को हार्दिक बधाई जिन्होंने महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन के मंच पर इस युवा अधिवेशन का आयोजन 'हमारी दशा—हमारी दिशा' विषय पर चिन्तन एवं विचार विमर्श हेतु आयोजित किया है। विषय गंभीर है, विषद् है। मुझे विशेष प्रसन्नता इस बात की है कि पहल युवाओं ने की है। प्रकट है कि वे युवा जो इस आयोजन से जुड़े हैं वे वर्तमान का मूल्यांकन कर भविष्य के संयोजन के लिए उत्सुक हैं।

युवा संगठन ने इस आयोजन के लिए बहुत उचित समय चुना है। यह जनवरी का महीना है। जनवरी नाम की उत्पत्ति 'जेनस' (JENUS) से हुई है जो प्राचीन रोमन देवता का नाम है जिन्हें God of Gateways or God of doors भी कहा जाता है। इनके दो चेहरे हैं — एक पीछे की ओर और एक आगे की ओर। वे पीछे के चेहरे से जो घट चुका है उसका मूल्यांकन अथवा अनुशीलन करते हैं और आगे के चेहरे से भविष्य के गर्त में छुपी संभावनाओं को खोजते हैं। अस्तु, जनवरी के महीने का प्रारंभ उपयुक्त समय है अपनी 'दशा' को देखने का और 'दिशा' खोजने का। आज से चार दिन के उपरांत सक्रांति का पर्व है। सक्रांति संकल्पों का पर्व है। ऐसा कहा जाता है कि सक्रांति पर वही संकल्प लेना चाहिए जो हम सचमुच लेना चाहते हैं। और, यह भी कहा जाता है कि सक्रांति पर लिए गए संकल्प अवश्य पूरे होते हैं। इस पर्व की पूर्व बेला में 'दशा' पर चिन्तन कर 'दिशा' का निर्धारण और उस ओर चलने का संकल्प न केवल पवित्र है बल्कि उसके पूरा होने की भी पूरी-पूरी आश्वस्ति है।

आप सब को नववर्ष—2010 की शुभकामनाएं। यह वर्ष आप सब के लिए मंगलमय हो और आपके सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि में अभिवृद्धि करे। हम सबके संकल्पों को साकार करे।

बिनोवा जी के पवनार आश्रम से निकलने वाली पत्रिका 'मैत्री' के नवीनतम अंक में एक सुन्दर शेर छपा है — *सीख ले फूलों से गाफिल, मुद्दा—ए—ज़िन्दगी / खुद महकना ही नहीं, गुलशन को महकाना भी है।* हमारी आज की युवा पीढ़ी पर दुहरी ज़िम्मेदारी है। उन्हें स्वयं सशक्त होना है, अपने व्यक्तित्व को विकसित करना है और समाज को नेतृत्व देना है, एक श्रेष्ठ विकसित समाज रचना करने का उत्तरदायित्व भी उठाना है। सशक्त युवा ही श्रेष्ठ समाज की नींव हैं।

अपनी चर्चा का प्रारंभ एक कहानी से करना चाहता हूं। एक ठेकेदार के पास एक कुशल कारीगर था। वह कारीगर अपनी कला में सिद्ध हस्त था। ईंट, सीमेंट का काम भी जानता था और लकड़ी का भी। वह जो भी भवन बनाता था उसके निर्माण में उसकी कला की झलक देखते बनती थी। एक दिन उस कारीगर ने ठेकेदार से आकर कहा— 'मालिक, मैं अब आयु के चौथे चरण में हूं। मेरे बेटे—बेटे हैं, नाती—पोते हैं, मैं उनके साथ आनन्दपूर्वक अपने जीवन का शेष समय व्यतीत करना चाहता हूं। अब मैं काम से अवकाश चाहता हूं।' स्वाभाविक है कि ठेकेदार को अपने सबसे विश्वस्त और कुशल कर्मकार का परित्याग करते हुए अच्छा नहीं लग रहा था। परंतु विवशता थी। उसने कहा— 'ठीक है मित्र, जैसी तुम्हारी इच्छा। परंतु जाते—जाते तुम मेरा एक काम कर जाओ। जितना शीघ्र हो सके एक भवन बना जाओ।' कारीगर ने काम शुरू किया किन्तु यह प्रकट था कि काम करने में उसका दिल हाथों का साथ नहीं दे रहा था। दीवार बनाने में रखी गई ईंटे पहले की तरह एक रेखा में न होकर आगे पीछे थी। सीमेंट के प्लास्टर की सतह एक सी न होकर ऊंची—नीची थी। दरवाजों में दरारे थीं। जैसे भी हो, भवन पूरा हुआ। कारीगर ने ठेकेदार को जाकर सूचना दी और उसे भवन देख लेने का आग्रह किया। ठेकेदार ने भवन में प्रवेश किया, पूरा भवन घूमकर देखा। उसकी समझ में सारी बात आ

गई। वह भवन के बाहर आया। द्वार बंद करे ताला लगाया। और चाबी कारीगर के हाथ में सौंपते हुए कहा— 'मित्र, तुमने जीवन भर मेरी सेवा की है, तुम्हें विदाई देने के पूर्व तुम्हारे लिए यह मेरा अंतिम उपहार है।' कारीगर की आंखों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। वह पश्चाताप में डूब गया। यदि उसे पहले से ही यह विदित होता कि जो भवन वह बना रहा है उसमें उसी को रहना होगा तो भवन वह संपूर्ण कुशलता के साथ बनाता। परंतु अब बहुत देर हो चुकी थी। जो हो चुका था उसे अनकिया करने का अथवा सुधारने का कोई अवसर अब उसके हाथ में नहीं था।

उस कारीगर की कहानी हम में से प्रत्येक की कहानी है। अपने वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में हम जो कुछ करते हैं उस समय हमें इस बात का रंचमात्र भी स्मरण नहीं रहता कि हम अपने कृतित्व के माध्यम से जिस संसार की रचना अपने आसपास कर रहे हैं उसी में हमें भी रहना है और यही वह हमारी रची हुई दुनिया होगी जिसे हम हमारे बच्चों और छोटे भाई-बहनों के लिए छोड़ जाएंगे। यदि हम इस संभावना जो कि एक वास्तविकता है के प्रति सचेत हो सकें तो हमारी कार्यपद्धति और हमारा आचार-विचार कुछ अलग तरीके का होगा।

आप सभी कभी न कभी पहाड़ों पर गए होंगे। हर हिल स्टेशन पर एक इको पाइंट होता है जहां से जो हम बोलते हैं उसी की गूंज या प्रतिध्वनि हमें सुनाई देती है। यह दुनिया एक घाटी की तरह है। हम जो करते हैं और कहते हैं उसी की प्रतिध्वनि हमारे पास लौट कर आती है। इसी आधार पर आधारित हरिद्वार की युग निर्माण योजना का सूत्र है— हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा।

‘दशा’ अर्थात् हमारे वर्तमान हालात का विहंगमावलोकन चार धरातल पर किया जा सकता है :
1. व्यक्ति, 2. परिवार, 3. समाज या देश एवं, 4. विश्व

हमारे इर्द-गिर्द समस्याएं अनंत हैं। हम उन्हीं को छूएंगे और उन्हीं का उल्लेख करेंगे जो मेरे विचार में हमसे सीधे-सीधे संबंधित हैं और मेरी युवाओं से अपेक्षा के अनुसार प्रासंगिक हैं। ये वे समस्याएं हैं जिनके उत्पन्न होने के लिए किसी व्यक्ति विशेष को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। यह समस्याएं स्वाभाविक हैं और हमारी तथाकथित प्रगति का परिणाम हैं। कुछ उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (Liberalization, Privatization and Globalization) के कारण उत्पन्न हुई हैं। मैं जिनका उल्लेख करने जा रहा हूं सच तो यह है कि वे समस्याएं कम युगधर्म अथवा विचाराधीन विषय विशेष के लक्षण अधिक हैं।

व्यक्ति के धरातल पर। आज का बच्चा उम्र से पहले बड़ा हो रहा है। कभी-कभी यह भी कहा जाता है कि हमने बच्चों से उनका बचपन छीन लिया है। अब नन्हें-नन्हें बच्चों की क्रीड़ाएं बाल सुलभता, सरलता से ओत-प्रोत न होकर ज्ञान और बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण होती हैं। बच्चों को अब इतनी जानकारी है और उनका मस्तिष्क कभी-कभी इतनी गंभीरता के साथ सक्रिय होता है जितना हमारी पीढ़ी में बड़ों या कम से कम किशोरों को हुआ करता था। जो भी हो, यह सुनिश्चित है कि हमारी आज की नई पीढ़ी सामान्यता: अधिक ज्ञानवान और अधिक बुद्धिमान है।

पश्चिमी संस्कृति हमारे देश की नई पीढ़ी पर हावी होती चली जा रही है। आध्यात्मिकता हमारी अपनी सांस्कृतिक विरासत होकर भी परित्याग की पीड़ा सह रही है। दूसरी ओर पश्चिम का भौतिकवाद जिसमें आमोद-प्रमोद में जीवन व्यतीत करना ही जीवन की परिपूर्णता माना जाता है। हमारी नई पीढ़ी में रच बस गया है। नई पीढ़ी 'खाओ पीओ मौज करो' (eat, drink and be merry) को अपनी जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार करती चली जा रही है। आज हर युवा को अधिक-से-अधिक पैसा, जल्दी-से-जल्दी कमा लेने की ललक है। उसे इसके लिए शॉर्टकट अपनाने से परहेज नहीं है। कुछ लोग ऐसी मंज़िल पाने के लिए सिद्धांतों से समझौता करने के लिए भी तत्पर हैं।

परिवार। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। अब न्युक्लियर फैमिली का चलन है परिवार की परिभाषा सिमट कर इतनी सी रह गई है— हम दो, हमारे दो। इसके घातक परिणाम निकल रहे हैं। सबसे ज्यादा प्रतिकूल प्रभावित हैं— हमारे बुजुर्ग। उनकी प्रमुख समस्या है— एकाकीपन। युवा दंपती या तो माता-पिता से दूर हो जाते हैं। कभी चाहकर और कभी विवशता से, परिस्थितियोंवश। जहां वे साथ रह रहे हैं वहां भी माता-पिता और युवा दंपत्ति की जीवन शैलियों में इतना अंतर है कि उन्हें एक छत के नीचे रहते हुए भी साथ-साथ समय बिताने का न तो अवसर मिल पाता है और न ही रुचि होती है। यह कटु सत्य है कि इन परिवारों में रहने वाले बुजुर्गों का काम सिर्फ इतना रहा गया है— पानी, बिजली के बिल जमा कराना, बच्चों को स्कूल पहुचाना या ले आना, सब्जी भाजी ला देना और जबकि घर के अन्य सदस्य अपनी-अपनी रुचि के कार्यक्रमों में भाग लेने बाहर गए हों तब घर की रखवाली करना। कुछ वृद्ध स्वयं को व्यस्त रखने के लिए प्रसन्नतापूर्वक यह सब करते हैं और कुछ के लिए ऐसा करना विवशता बन जाता है।

विवाह की संस्था टूट रही है। एक अनुमान के अनुसार अब लगभग 70 से 80 प्रतिशत तक विवाह विफल हो रहे हैं। या तो तलाक हो रहे हैं या दम्पति प्रथक रह रहे हैं। मैंने हाल ही में एक लेख पढ़ा है जिसमें लिखा है— **Death is not the great loss in life; the great loss is when relationship dies between the two while they are alive.** 'मैत्री-करार' (Live in Relationship) का चलन बढ़ रहा है। जबतक निभे साथ रहो और जिस दिन थोड़ी सी भी बिगड़ जाए एक दूसरे को नमस्कार कहो और अलग रहने के लिए चल पड़ो। इस प्रवृत्ति का सर्वाधिक घातक परिणाम बच्चों पर पड़ रहा है। मैंने कुछ देर पहले कहा है कि आज के बच्चे कुशाग्रबुद्धि संपन्न और मेधावी हैं। वे जो भी करेंगे चतुरता के साथ करेंगे। यदि उन्हें अच्छी शिक्षा और अच्छा वातावरण मिल गया तो वे असाधारण प्रतिभा से संपन्न व्यक्तित्व के धनी होंगे। और यदि उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में जीना पड़ा या जब उन्हें प्यार और अपनत्व मिलना चाहिए तब उपेक्षा, परित्याग और एकाकीपन मिला, माता-पिता के होते हुए भी यदि उन्हें अनाथ का जीवन जीना पड़ा तो वे सन्मार्ग के स्थान पर कुमार्ग पर चले जाएंगे। वे अपराधी मनोवृत्ति के शिकार हो सकते हैं और यदि वे अपराधी बन गए तो भी बुद्धिमान या चतुर अपराधी होंगे। विश्व के जितने भी बड़े-बड़े तानाशाह हुए हैं उनके जीवन एक विश्वविद्यालय ने शोध किया तो पता चला कि बाल्यकाल में वे माता-पिता के स्नेह से वंचित हो गए थे और दमन का शिकार हुए थे। इसलिए उनके व्यक्तित्व में दमनकारी प्रवृत्तियां पैदा हुईं। उन्हें सताने में आनन्द आने लगा।

बुजुर्ग एकाकीपन के अतिरिक्त आर्थिक असुरक्षा और कहीं-कहीं संपत्ति के विवादों से पीड़ित हैं। दो पीढ़ियों के बीच इस बढ़ते अंतर के कारण बुजुर्गों के अनुभवों का लाभ नई पीढ़ी को नहीं मिल पा रहा है। साथ ही, वे पारंपरिक, सांस्कृतिक अथवा शाश्वत मूल्य जिन्हें बुजुर्गों ने अपने

से पहले की पीढ़ी से विरासत में प्राप्त किया था उसे वे आने वाली पीढ़ी को धरोहर अथवा विरासत के रूप में सौंप नहीं पा रहे हैं। फलतः इन मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

समाज और देश।

भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। टासंपेरेसी इन्टरनेशनल की सन 2009 की रिपोर्ट में 180 देशों की सूची जिन्हें इस क्रम में रखा गया है कि वह देश जहां की व्यवस्था में ईमानदारी है और भ्रष्टाचार लगभग शून्य है वे ऊपर हैं जैसे, न्यूजीलैंड, डैनमार्क, सिंगापुर, स्वीडन, स्वीटजरलैंड आदि। और, वे देश जहां भ्रष्टाचार का बोलबाला है वे सबसे नीचे जैसे सोमालिया, अफगानिस्तान, म्यांमार, सूडान आदि। इन 180 देशों की सूची में, यह हमारा दुर्भाग्य है कि भारत का क्रम 84 है। भ्रष्टाचार के मुख्य कारण हैं : राजनैतिक अस्थिरता ; भौतिकवादिता, अधिकार और कर्तव्य में विरोधाभास रखने वाली परिस्थितियों पर नियमन (रेगुलेशन) का अभाव ; और, सार्वजनिक एवं शासकीय संस्थाओं का आदर्श विहीन संचालन। अब तो भ्रष्टाचार हमारी जीवनशैली का अंग बन गया है। हम भ्रष्टाचार को त्याज्य अथवा निंदनीय नहीं मानते।

उत्तरदायित्वविहीनता (lack of accountability) का बोलबाला है। कथनी और करनी में अंतर है।

समझदार और सद्वृत्ति रखने वाला तबका शासन और प्रशासन से विरक्त हो चुका है। अच्छे लोग राजनीति में नहीं आना चाहते। अर्थशास्त्र का सिद्धांत – खोटा सिक्का अच्छे सिक्के को चलन से बाहर कर देता है। (Bad money drives good out of circulation) अर्थशास्त्र का यह नियम राजनीति और समाजशास्त्र में भी लागू हो रहा है। अच्छे लोग चलन से बाहर होते जा रहे हैं।

महिलाएं और युवतियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं। वे पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर बल्कि उनसे भी तेज रफ्तार से आगे बढ़कर अपनी पहचान बना रही हैं। अनेक शिक्षण संस्थाओं में विशेषकर नेशनल लॉ स्कूल्स में, मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में भी छात्राएं मेरिट लिस्ट में आ रही हैं। मीडिया ने विश्व की सशक्त महिलाओं की सूची बनाने के लिए सर्वे करना और सूची बनाना प्रारंभ कर दिया है। हमारे देश में न्यायाधीश, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति जैसे उच्च और उच्चतम पदों को महिलाएं सुशोभित कर रही हैं। यह प्रतिभा जो सुप्त थी अब न केवल प्रकट हुई है बल्कि एक विस्फोट की तरह फूट पड़ी है। हमने इस प्रतिभा का मूल्यांकन किया है और स्वीकार भी किया है। महिलाओं की इस प्रगति को न तो रोका जा सकता है और न रोका जाना चाहिए। ऐसा करना न तो उनके हित में होगा और न समाज और देश के। किन्तु इस कारण समाज और परिवार में समाज में महिलाओं के उत्तरदायित्व की नई परिभाषा रचने की आवश्यकता है। पुरुष बनाम स्त्री के अधिकारों, कर्तव्यों और पारस्परिक संबंधों के बीच संतुलन क्या और कैसा बनाया जाए इस पर समाजशास्त्रियों को चिन्तन करने की आवश्यकता है।

विश्व।

विज्ञान और तकनीक की प्रगति तथा आवागमन और संचार के साधनों में द्रुतगति से सुधार, विकास और नव प्रवर्तन हुआ है कि सारा विश्व सिमटकर गांव (ग्लोबल विलेज) बन गया है।

विश्व के किसी भी देश के किसी भी कोने में कोई घटना घटित हो उसका प्रभाव सारे विश्व पर पड़ता है।

सारा विश्व आतंकवाद की चपेट में हैं। अमेरिका जैसा सशक्त देश अपने संपूर्ण साधनों का प्रयोग करके भी एक ओसामा बिन लादेन को परास्त नहीं कर सका।

हाल में सारा विश्व आर्थिक की मंदी की चपेट में भी रहा है। परन्तु यहां एक विरोधाभास है। आज भी कोई मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपने रहने के लिए एक मकान खरीदना चाहे तो लो नहीं सकता। यदि मंदी है तो मकान सस्ते क्यों नहीं हैं? लोगों की शान-शौकत में कोई कमी दिखाई नहीं देती। एक से एक कीमती गाड़ियां बाजार में आ रही हैं और बिक रहीं हैं। शादी हो, जन्मोत्सव हो, जन्मदिन हो, किसी भी ऐसे अवसर पर होने वाले आयोजन और भोजों में कहीं भी मंदी का असर दिखाई नहीं देता। यह कैसी मंदी है? कदाचित इसका कारण यह है कि समाज में गरीब और अमीर के बीच का अंतर बढ़ा है। जो संपन्न है वह और भी संपन्न हुआ है। जो विपिन्न है वह और भी विपिन्न हुआ है।

सामान्य—सर्वत्र। कुछ ऐसी विधाएं या ऐसे लक्षण हैं जो व्यक्ति, परिवार, समाज/देश और विश्व सभी से संबंध हैं। ब्रह्मण का विकास (Evolution of Universe) की गति अपूर्व हो गई है। विश्लेषक वैज्ञानिक कहते हैं कि ब्रह्मण के विकास में प्रारंभ से अब तक के इतिहास का अनुशीलन किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रारंभ में जो विकास पांच लाख वर्ष में हुआ उतना विकास अगले पचास हजार वर्षों में हो गया। वही विकास उससे अगले पांच हजार वर्षों में हो गया। जिस गति से सभ्यता ने पांच हजार वर्ष में प्रगति की वही प्रगति उससे अगले पांच सौ वर्षों में हो गई। जो परिवर्तन पांच सौ वर्षों में हो सके थे वही परिवर्तन पिछले पचास वर्षों में हो गए और अब हम उस गति की ओर बढ़ रहे हैं कि पचास वर्षों की प्रगति हम पांच वर्षों में देख सकेंगे। ब्रह्मण के विकास की इस प्रगति में हमारी अनेक मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया है। अमेरिका के रे कुर्जवेल जैसे वैज्ञानिकों की बात यदि मानी जाए तो मनुष्य अमृत्यु की ओर बढ़ रहा है। वैज्ञानिक दावा कर रहे हैं कि इस सदी के अंत तक मनुष्य की आयु 150 वर्ष होगी और संभव है कि विज्ञान मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेगा। तब देवताओं और मनुष्य की आयु में कोई अंतर नहीं रह जायेगा। जब यह निश्चित हो जाएगा कि मृत्यु होनी ही नहीं है तब निर्वाण और मोक्ष जैसी अवधारणाएं जो मनुष्य को सन्मार्ग की ओर सदैव से प्रेरित करती रही हैं उनका क्या होगा।

उपभोक्ता के दृष्टिकोण से पिछली सदी की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धताएं हैं, लैपटॉप, सेलफोन और दूरदर्शन। इन तीनों ने हमारी जीवन पद्धति और दिनचर्या को पूरी तरह बदल दिया है। एक समय का आदर्श यह था कि घर और ऑफिस में दूरी रखो ; घर की बात ऑफिस में नहीं और ऑफिस का काम घर पर नहीं। यह विभेद अब समाप्त हो गया है। लैपटॉप और सेलफोन के कारण घर की पहुंच ऑफिस तक हो गई है और ऑफिस का काम बेडरूम में भी होने लगा है। दूरदर्शन के कारण समाज क्या पड़ोसियों तक से संपर्क शिथिल हो गए हैं। मनोरंजन के लिए घर से बाहर जाना अब जरूरी नहीं रहा है।

यह तो हुई 'दशा' हम कहां और कैसे जी रहे हैं। विभिन्न धरातलों पर उसका एक संक्षिप्त अवलोकन। अब 'दिशा' की ओर बढ़ते हैं। दिशा अर्थात् समाधान।

मैं स्वीकारोक्ति करना चाहता हूँ कि मैं कोई बड़ा चिन्तक, विचारक, दार्शनिक अथवा उपदेशक नहीं हूँ। फिर भी कुछ बात मुझमें है जो मेरे मन में आत्म विश्वास जाग्रत करता है। इसी कारण आपने मुझे अपने बीच बुलाया है और मैंने भी आने का साहस किया है। मैं ईश्वर पर विश्वास करता हूँ और उसकी कृपा की अनुभूति भी मुझे अक्सर होती है। आप भी विश्वास कीजिए आपको भी होगी। मैं बुजुर्गों और बड़ों का सम्मान करता हूँ और सदैव उनका आशीर्वाद प्राप्त करता हूँ। यह आशीर्वाद मुझे सक्षम भी बनाता है और संरक्षण भी देता है। महाभारत के युद्ध में जब कौरव और पांडव सेनाएं योद्धाओं सहित आमने-सामने खड़ी थीं, भगवान श्री कृष्ण का अर्जुन को दिया गया गीता का उपदेश समाप्त हो चुका था। अर्जुन ने भूमि पर पड़ा हुआ गांडीव फिर से अपने हाथों में उठा लिया था और युद्ध के आरंभ का उद्घोष शंखध्वनि के माध्यम से हो रहा था तभी एक कौतुहलपूर्ण दृश्य देखा गया। यकायक युधिष्ठिर अपने समूह से बाहर आए और तेज गति से चलते हुए कौरव सेना में प्रविष्ट हो गए। वे निःशस्त्र थे। अर्जुन को बड़ा आश्चर्य हुआ— बड़े भैया यह क्या कर रहे हो? उसने भगवान कृष्ण से जानना चाहा। कृष्ण मौन मुस्कराते रहे। थोड़ी देर में युधिष्ठिर लौटे और अपने समूह में जाकर शस्त्र लेकर रथारूढ़ हो गए। तब कृष्ण अर्जुन से बोले— पांडवों के लगभग सभी गुरुजन जैसे भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि कौरवों की सेना में हैं। युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व युधिष्ठिर ने जाकर सबको प्रणाम किया है और उनका आशीर्वाद लिया है। किसी ने कहा— विजयी भवः। किसी ने आशीर्वाद दिया है— चिरजीवी भवः, किसी ने कहा है— चिरायु हो। जो युधिष्ठिर इतने आशीर्वाद लेकर आए हैं क्या वे पराजित हो सकते हैं ? अर्जुन, तुम युद्ध करो। युधिष्ठिर ने जो किया है उससे आधी विजय तो तुम्हारी हो चुकी है। यह है बड़ों का सम्मान करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने की महिमा।

मेरी उत्कृष्ट साहित्य पढ़ने में सदैव से रुचि रही है। और फिर परमेश्वर की अन्नय कृपा? बड़ों का आशीर्वाद और आप सब की शुभकामनाएं मेरे साथ थी जिससे मुझे न्यायपालिका के शीर्षस्थ पद— उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद का उत्तरदायित्व वहन करने का अवसर मिला जिसमें मैंने बहुत कुछ अनुभव किया और बहुत कुछ सीखा। विषम और गंभीर रूप से विवादग्रस्त घटनाक्रम के बीच से गुजरा हूँ। कठोर निर्णय लिये हैं। सभी प्रकार के स्वभावों वाले व्यक्तियों से मेरा साक्षात्कार हुआ है। इस अर्थ में मैं अपने को कुछ अनुभवी भी कह सकता हूँ।

संक्षेप में ईश्वर की कृपा, बड़ों के आशीर्वाद, उत्कृष्ट साहित्य और अनुभव— इन सबके मिले-जुले आधार पर कुछ समाधान मेरे विचार में आते हैं उन्हें आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

////////////////////////////////////